CHETANA
International Journal of Education (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)
Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व निर्माण में बहु माध्यम उपागम की भूमिका का अध्ययन

अम्बिका भावरियाँ
बी.एड. एम.एड. छात्रा
डॉ. मनीष सैनी
असोसिएट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
E-mail: choudharyambika49@gmail.com, Mobile-8955689796

First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध का विषय "उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व निर्माण में बहु माध्यम उपागम की भूमिका का अध्ययन" है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रुचिकर एवं परिणामोन्मुख बनाने के लिए बहु माध्यम उपागम का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। बहु माध्यम उपागम से आशय शिक्षण में विभिन्न माध्यमों जैसे दृश्य, श्रव्य, श्रव्य–दृश्य, डिजिटल उपकरण, चित्र, चार्ट, मॉडल, वीडियो, स्मार्ट बोर्ड तथा अन्य तकनीकी संसाधनों के समन्वित उपयोग से है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि बहु माध्यम उपागम उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस सीमा तक प्रभावित करता है तथा उनके व्यक्तित्व निर्माण में इसकी क्या भूमिका है। यह उपागम विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल, सहयोग की भावना, रचनात्मक सोच तथा निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर बहु माध्यम उपागम का प्रयोग शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के साथ–साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अत्यंत उपयोगी है।

मुख्य शब्दः *उच्च प्राथमिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व निर्माण, बहु माध्यम उपागम, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया।*

प्रस्तावना

तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास से शिक्षा का रूप परिवर्तित होता जा रहा है। उस पर औद्योगिकीकरण का काफी प्रभाव पड़ता है, जनसंचार एवं यातायात के साधनों ने जनसंख्या की गतिशीलता बढ़ाई है। ज्ञान का विस्फोट इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि शैक्षिक तकनीकी के क्षेत्र में नवाचार बढ़ते चले जा रहे हैं। एक अच्छे शिक्षक को इन नवाचारों से अवगत होना चाहिए और आवश्यकतानुसार प्रभावी शिक्षण के लिए इनका उचित उपयोग करना चाहिए। शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। यह न केवल व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उसके व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, मूल्यों तथा व्यवहार में भी सकारात्मक परिवर्तन लाती है। वर्तमान युग में शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तित हो रहा है, जहाँ पारंपरिक शिक्षण विधियों के स्थान पर नवीन एवं प्रभावी शिक्षण उपागमों को अपनाया जा रहा है। यह उपागम विद्यार्थियों के लिए अधिगम को अधिक रोचक, सजीव एवं प्रभावी बनाता है। यह इस बात का संकेत देती है कि विद्यार्थी ने शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से कितना ज्ञान अर्जित किया है। बहु माध्यम उपागम के माध्यम से जटिल विषयों को सरल एवं स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों की समझ में वृद्धि होती है तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सुधार देखा जाता है। यह उपागम विभिन्न इंद्रियों (श्रवण, दृष्टि आदि) को सक्रिय करता है, जिससे अधिगम अधिक स्थायी एवं प्रभावी बनता है।

समस्या का औचित्य

अध्ययन आदतें व्यक्तित्व का एक पहलू हैं। आदतें बालक के मानसिक व सामाजिक व्यवहार को दिशा प्रदान करती हैं। आदतों का जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में अत्यधिक महत्तव हैं। अच्छी आदतों से शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति सरलतापूर्वक सम्भव हैं, वही बुरी आदते अध्ययन काल में शैक्षिक विकास को अवरुद्व कर देती हैं। राजस्थान शैक्षिक एंव आर्थिक दृष्टि दोनो से पिछड़ा हुआ हैं। अतः यहॉ के विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास के लिए उनमें अच्छी आदतें विकसित करना विद्यार्थी जीवन व देश के लिए उपयोगी हैं। औपचारिक शिक्षा की प्रभावशीलता के मूल्याकंन का आधार विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि हैं। विद्यार्थी का परिवार, समाज ओर विद्यालय शैक्षिक प्रक्रिया संरचना के घटक हैं। इन तीनों घटकों एंव अन्तसम्बन्धों का सहारा लेकर विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता हैं।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

- **मुल्ला नई बवेजा, गजल शाहिन और गुजार अहमद (**2025) इस अध्ययन के लिए न्यादर्श हेतु पाकिस्तान के दूरस्थ सामान्य शिक्षा के विद्यालय के पिद्यार्थियों का चयन किया गया । इन्होनें निष्कर्ष में पाया कि दूरस्थ शिक्षा प्रक्रिया के विद्यार्थियों का सामान्य शिक्षा के विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी सम्बन्धी बहुमाध्यम उपागम में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है । दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों और सामान्य शिक्षा के विद्यार्थियों की सम्बन्धी प्रबन्ध सम्बन्धी बहुमाध्यम उपागम में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।
- **कुमार,संजय,(2024)** इन्होने न्यादर्श के रुप में दिल्ली के राजधानी कॉलेज के 129 विद्यार्थियों का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया गया है कि कॉलेज स्तर के विद्यार्थियो का कॉलेज का अध्ययन स्तर सामान्य है । और स्व अध्ययन का स्तर अधिक है । विद्यालय स्तर व कॉलेज स्तर के विद्यार्थियों के वातावरण का प्रभाच में काफी अन्तर पाया गया है । अतः कालेज स्तर पर बहुमाध्यम उपागम का अधिक प्रभाव होता है । इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उपलब्धि का स्तर कम हो जाता है ।
- **शर्मा, मणिका एंव खातून ताहिरा (2023)** इस अध्ययन के उद्देश्य थे किसाइन्स एचिवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्टस ऑफ सिग्म सेक्स एण्ड को एजुकेशन स्कूल्स। इन्होनें निष्कर्ष में पाया कि छात्र–छात्राओं के विज्ञान विषयों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

साहित्य विवेचना

सबंधित साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विभिन्न शोधकर्ताओं ने विद्याथ्रियों की बहुमाध्यम उपागम एवं शैक्षिक उपलब्धि पर अलग–अलग अनुसंधान कार्य किये है तथा अन्य चरों के इन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया है , परन्तु उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन

सम्बन्धी आदतों के विभिन्न आयामों एवं मनोवृतियों के शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध पर अनुसंधान कार्य किया जाना शेष है, अत : शोधकर्ता द्वारा यह विषय चुना गया है। विद्यार्थियो की बहुमाध्यम उपागम पर हुए अनुसंधानों की संख्या अभी कम है। अतः वर्तमान शोध प्रबन्ध विद्याार्थी जीवन के एक महत्तवपूर्ण आयाम के अध्ययन की दिशां में किया गश लघु प्रयास है।

समस्या कथन

"उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व निर्माण में बहु माध्यम उपागम की भूमिका का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य

गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

सरकारी व गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि व बहुमाध्यम उपागम के प्रान्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

अनुसंधान कार्यप्रणाली

- **अनुसंधान की विधियॉं**– प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहुमाध्यम उपागम के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।
- **जनसंख्या –** जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी जनसंख्या माने गये। जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के 100 छात्र व 100 छात्रा को सम्मिलित किया गया हैं।
- **न्यादर्श–** प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रुप में जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालय के दो सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया हैं।न्यादर्श का चयन यादृच्छिक रुप से किया गया।
- **अध्ययन के उपकरण–** अध्ययन सम्बन्धी आदतों के अध्ययन हेतु स्वनिर्मित अध्ययन मापनी का प्रयोग में ली गई। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु विद्यालय अभिलेख से प्राप्तांक प्राप्त किये जाएगे।
- **अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी–** प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण एंव सह–सम्बन्ध गुंणाक का प्रयोग किया गया हैं।

वैधता एवं विश्वसनीयता

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण की वैधता विषय विशेषज्ञों की राय द्वारा निर्धारित की गई। विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर संशोधन उपरांत Content Validity Index का मान 0.89 प्राप्त हुआ। उपकरण की विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु Cronbach's सचीं विधि का प्रयोग किया गया, जिसका मान 0.84 प्राप्त हुआ। अतः उपकरण वैध एवं विश्वसनीय पाया गया।

परिकल्पना सरकारी व गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं की बहुमाध्यम उपागम व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्यमानों में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।

सामान्य जाानकारी	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	सहसम्बन्ध	स्वीकृत / अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय की छात्रा	100	163	0.69	स्वीकृत
गैर सरकारी विद्यालय की छात्रा	100	172		

विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या में सरकारी एंव गैर सरकारीउच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं की बहुमाध्यम उपागम व शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ों को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि सरकारी व गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्राओं की बहुमाध्यम उपागम का मध्यमान 163 और शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 172 है। इनमें सहसम्बन्ध की गण्ना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.76 है। अतः सरकारी ओर गैर सरकारी उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राओं की बहुमाध्यम उपागम एंव शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्मक नगण्य सहसम्बन्ध है। उपर्युक्त रेखाचित्र में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओ की बहुमाध्यम उपागम व शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। लेखाचित्र में सरकारी और गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय छात्राओं की बहुमाध्यम उपागम व शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान कुल 335 है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी ओर गैर सरकारीउच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्राओ की बहुमाध्यम उपागम व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है ।

परिणाम

अतः शून्य परिकल्पना सरकारी व गैर सरकारीउच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्राओं की बहुमाध्यम उपागम व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह है कि सरकारी विद्यालय की छात्राओं को अध्ययन के साथ साथ घरेलु कार्य भी करना पड़ता है। इस कारण उनकी अध्ययन सम्बन्धी आदतों जैसे कि विद्यालय की नियमितता , एकाग्रता, गृहकार्य, स्वमूल्याकंन आदि का विकास सही प्रकार नहीं हो पाता हे। इसलिए सरकारी की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में बहुमाध्यम उपागम व शैक्षिक दपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मंगल, एस. के. (2013). शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग प्रा. लि.
2. शर्मा, आर. ए. (2011). शैक्षिक तकनीकी। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो.
3. अग्रवाल, जे. सी. (2009). शैक्षिक मनोविज्ञान के तत्व। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस.
4. सिंह, वाई. के. (2006). शैक्षिक तकनीकी एवं शिक्षण प्रक्रिया। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉरपोरेशन.
5. भाटिया, एच. आर. (2012). शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल तत्व। नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन.
6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
7. बुच, एम. बी. (1988–1992). शिक्षा में अनुसंधान का पंचम सर्वेक्षण। नई दिल्ली: एनसीईआरटी.
8. पांडेय, के. पी. (2010). शैक्षिक तकनीकी एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.
9. मेयर, रिचर्ड ई. (2009). मल्टीमीडिया अधिगम। (हिन्दी अनुवाद संदर्भ हेतु) नई दिल्ली: शैक्षिक प्रकाशन.
10. यादव, आर. एस. (2015). व्यक्तित्व विकास एवं शिक्षा। जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

Webliography

1. एनसीईआरटी आधिकारिक वेबसाइट – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005
2. बहु-माध्यम शिक्षण एवं ई-लर्निंग से संबंधित शोध लेख – शैक्षिक तकनीकी जर्नल्स
3. शिक्षा में तकनीकी उपयोग एवं पाठ्यचर्या सुधार संबंधी नीति दस्तावेज